

DPN 6886

Title : लोकेश्वरनाम / LOKES'VORA NĀMA

Run. No. 7611

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तुति Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 8'0 x 21

Folios 4+2 Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor सुगतदास तुलाधर

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Sugatadas Tuladhar

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon : इति श्री ३ वादेस्वर नाम समाप्त ॥

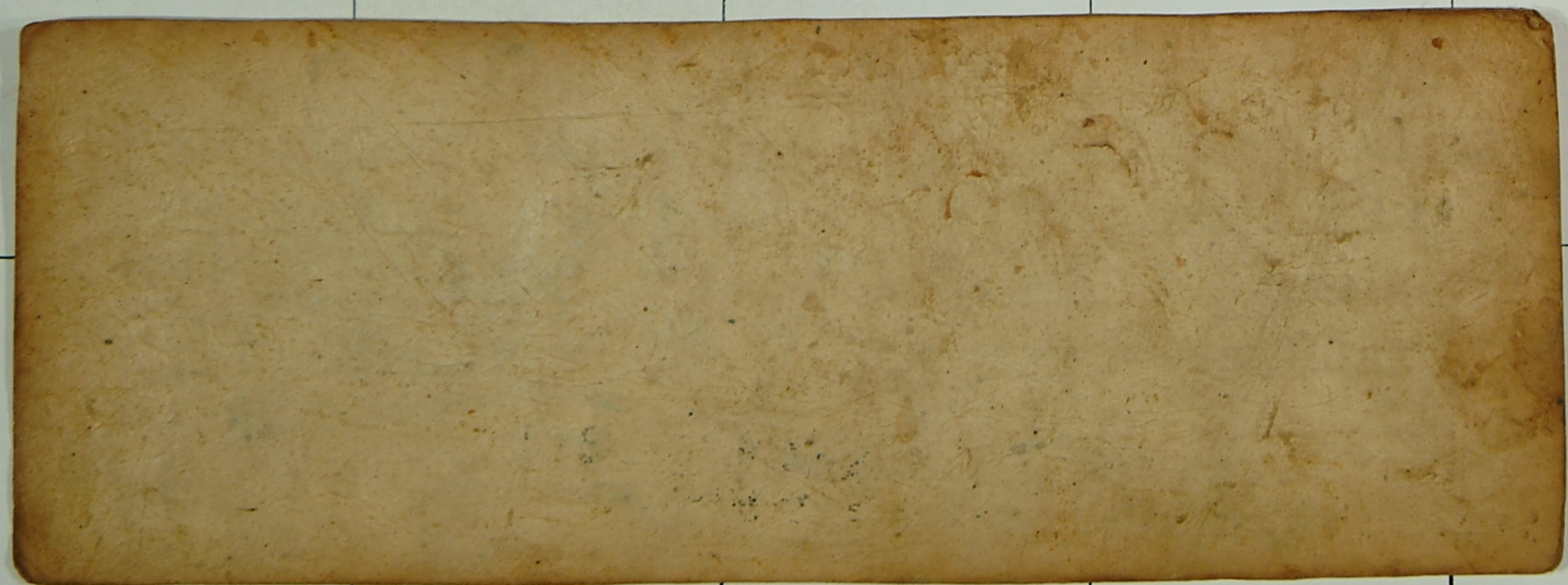
ॐ नमो श्री आर्यविजयेस्वाम्य ॥ ॥ नमोस्तु अवलोकितेस्वाम्य नमः ॥ महेश्वर नमः ॥

20

15

10

5



centimeters 5 10 15 20 25 30

२०
१५
१०
५
०
५
१०
१५
२०
२५
३०

ॐ नमो ४ आर्यावला
सुवत्रा किं नम्य नायनमः
ॐ आर्यावत्रा किं नम्य
वसं कलाय नमो ॥ पृथिः
न ॥ आर्यासनं कनायन

किं नम्य नाय ॥ नमो
महर्षि नायनम ॥ पृथिः
आयाय वनदाय नमो ॥ व
विवन लावनं कनायन
म ॥ जनं सह मुं र नायन

म ॥ कोटि सत सह मुं कनायनम ॥ न काद नि र्घाय नम ॥ वद वा मूखय
र्य नायनम ॥ वमो पिये यायनम ॥ सर्व सख वनि भी कृष्ण कनायनम ॥ कृष्णम
कलाम ल्य आर्यासनं कनायनम ॥ स्नान नाभि मूर्त्त मं कलायनम ॥ नल
पियाय उ हमायनम ॥ अवि विहं मष घ कनायनम ॥ स्नान न ली समं लं क
नायनम ॥ सर्व देव पूजित नम स्तु नायनम ॥ वंदि नायनम ॥ अत्युद दा

यनम॥ षड्पात्रमिता निद्धे मनं कनायनम॥ सूर्यवलत्रायनायनम॥
 ॥ धर्मदिपंकलायनमा॥ कामरूपस्वल्पायनम॥ गन्धर्वत्रायकार्कन
 पंचनत्रायनम॥ सागलकृद्धिगौरिनधमायनम॥ पंचमायंज्ञागव
 दुपातायनम॥ अनेकसमाधिग्रनसहस्रकिर्षयनमा॥ अहिनमिनक
 त्रायधम॥ सुभिर्गवकनायनम हंडिनिगं उलयंकुलसुमार्गपिनि

भाद्रकनायनम बहुवपलितानसमहानियनम॥ सूपनिवानमपु
 विंतकनायनम॥ विक्तामाधिनलनायनम॥ निर्वीधमात्मपदमनं
 कनायनम पंचदशगत्रसमृद्धेषकनायनम॥ द्वाजैरुतजगंकनायनम
 ॥ याधिपनिभाकनंकनायनम॥ नेश्यापनंदनागनायनम॥ क्वापवितायनः
 म॥ अमाद्यपासुदमनंकनायनम॥ अनेकमलुजगार्धुवायनम॥ वज्र

15

दग्धनां हृत्तु नायनम ॥ अभिपूगवाय शुक्रवर्धयनम ॥ पद्मरुद्राय नमः
 ॥ ॐ ॥ पद्मनालयनम ॥ पद्मशायनम ॥ सर्वभूतस्नानंदाय कायनम ॥ हि
 नंदिनार्कं पप्रकायनम ॥ चंद्रशानि च्चनं धनि वरुचिं नम ॥ स्नानदाय
 कायनम ॥ अस्मिन्नाजनदृष्टाय नम ॥ अविचिनर्कस्वधनं कनायनम ॥ यत्
 नके लीतसुख उदायनाय नम ॥ ॥ इति श्री ३ लोकस्वनामं समाप्त ॥

५

१०

5

मा शुभस्मरसुतासनकनायनम ॥ निलात्यलननाय
 नम ॥ विशाधिपतयनम ॥ सर्वज्ञसुददनकनायनम ॥ वर
 विविधविचिण्मात्मपित्रिनायनम ॥ सदाशुभाशुभप्रका
 नायनम ॥ अशुभकालिमात्मपित्रिनायनम ॥ अतमाशु
 कनायनम ॥ पत्रमानुजगपमसुमाधिपतयनम ॥ सुत

0

5

10

15

20

25

सरुचकि र्भियनम ॥ सूर्य ताप द ग्यनां च ॥ शु ता य न म
 ॥ स गी पू ग वा य ॥ सु क व र्भियनम ॥ पद्म रु ला य न म ॥
 यद्म ना ला य न म ॥ पद्म श्री या य न म ॥ स व स त्व ह्ना न दा
 य का य न म ॥ हि न दि ना नू कं य का य न म ॥ च नु र्ग ति ॥
 व न ख नि व र्नु चि न म ॥ ह्ना न दा य का य न म ॥ अ सि र्ग

र्नु न द द्वा य न म ॥ अ वि वि न र्क स्वा ख न क रा य न म ॥
 प त न र्क स्मि त स त्व उ धा त ना थ यि न म ॥ ॥ इ ति
 श्री श्री श्री लो क ग्य त ना म स्म ति सु रं ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

20

15

10

5



L5